फॉस्टयिन बार्गेन बनाम सैद्धांतकि स्थति

मेन्स के लयि:

फॉस्टयिन बार्गेन बनाम राजनीति में सैद्धांतकि स्थति।

फॉस्टयिन बार्गेन:

- **परचिय:**
  - इसकी शास्त्रीय परभिाषा **एक ऐसे समझौते को संदर्भति करती है जहाँ कोई व्यक्ति सर्वोच्च नैतकि और आध्यात्मकि मूल्य का व्यापार** करता है, यह एक मूल सद्धिांत जो शक्ति, ज्ञान या धन के बदले में उनके आवश्यक अस्तत्वि को परभिाषति करता है।
  - यह वचिार जोहान जॉर्ज फॉस्ट की **जर्मन कविदंती** से आया है जन्हिोंने असीमति ज्ञान और सांसारकि सुखों के लयि अपनी आत्मा शैतानों के हाथों को बेच दी थी।
    - यह एक ऐसी कहानी है जसिने क्रस्टिोफर मार्लो के नाटक **'डॉक्टर फॉस्टस'** से लेकर गोएथे के नाटक **'फॉस्ट'** तक के महान साहत्यि को प्रेरति कयिा है।
    - इस सौदे में **अनुबंध समाप्त होने पर फॉस्ट की आत्मा को शैतान द्वारा अनंत काल के लयि पुनः प्राप्त** कर लयिा जाता है। यह एक कठनि सौदा है।
  - आधुनकि शब्दों में इसका अर्थ है कसिी के **वविक के नलिंबन या दमन के बदले प्राप्त अस्थायी लाभ।** हालाँकि इससे समझौते का दोष दूर नहीं होता है।
- **उदाहरण:**
  - दल्लिी के मुख्यमंत्री ने भी ऐसा सौदा कयिा होगा जब उन्होंने गुजरात चुनाव में प्रचार करते हुए बलिकसि बानो मामले में गंभीर अपराधों के लयि दोषी 11 लोगों की रहिाई की नदिा नहीं करने का फैसला कयिा।
  - शायद अपदस्थ म्याँमार की नेता आंग सान सू ची ने भी रोहग्यिा के खलिाफ सेना के अत्याचारों के बावजूद सत्ता में आने के लयि म्याँमार के जनरलों के साथ सौदा कयिा था।
  - भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश रंजन गोगोई के मामले को भी सरकार के साथ एक फॉस्टयिन बार्गेन माना जा सकता है जसिके परणिामस्वरूप उन्हें राज्यसभा के लयि नामांकन मलिा।
  - फॉस्टयिन बार्गेन भले ही अरुचकिर और अनैतकि क्यों न हो उपयोगतिावादी शब्दों में मापे गए बेहतर परणिामों द्वारा उचति ठहराया जा सकता है।
    - श्री केजरीवाल गुजरात में बेहतर सरकार बना सकते हैं और आंग सान सू की ने म्याँमार में लोकतांत्रकि सरकार का नरि्माण कयिा।

सैद्धांतकि स्थति

- **परचिय:**
  - फॉस्टयिन बार्गेन के वपिरीत कुछ राजनेता यह मानते हुए समझौता नहीं करना पसंद करते हैं कि भवषि्य की भलाई के लयि बुराई के साथ समझौता करने के उपयोगतिावादी कलन को अपनाने के बजाय सार्वजनकि पदों को स्वीकारना बेहतर है जो कसिी के मूल्यों के अनुरूप हों।
- **उदाहरण:**
  - बाबासाहेब अम्बेडकर ने वर्ष 1951 में इस्तीफा दे दयिा जब उन्हें लगा कि नेहरू ने हदिू कोड बलि पर कानून मंत्री के रूप में उनकी स्थति को कम कर दयिा है, जसि पर वे चर्चा करना चाहते थे।
  - उनका इस्तीफा भाषण सैद्धांतकि स्थति का एक कलात्मक बयान है।
  - गांधीजी ने कोई फॉर्स्टयिन सौदेबाजी नहीं की, न ही नेल्सन मंडेला या जवाहरलाल नेहरू या रवींद्रनाथ टैगोर ने।

स्रोत: द हदिू

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/faustian-bargain-vs-principled-position